अच्छा या बुरा क्या समझू मैं.....

~~बच्चों का सवाल या सबका~~....

सब कहते है पढ़ाई करोगे तो.....
आगे बढोगे..... तो बच्चे कहते
तो मैं क्या करूँ.....

हमेशा सुनती हूँ वो कितना होशियार
वो कितना अच्छा.....
तो इस मे मैं क्या करूँ

क्या मैं अच्छी नही था.....
सच्ची नही
हूँ तो मैं भी एक बच्ची ना.....

बडे लोग सिर्फ अपना सोचते
पढाई और अव्वल आना इस पर
छोडते.....
अव्वल नही आई तो मैं क्या करूँ.....

कुछ कहते तुम अच्छी हो
कुछ कहते तुम बुरी हो

मैं सिर्फ यह कहती हुँ
तो मैं क्या करूँ......

बाते बदल गई, लोग बदल गए
किसी से कुछ कहे तो मैं क्या करूँ.....

रिशते है बहोत पर सच्चे है कुछ..
किसमे है सच्चाई किसमे है बुराई.

मैं अगर मदद की पुकार माँगू तो....
कुछ कहते क्या मैं मदद करूँ पर...
कुछ कहते तो मैं क्या करूँ

बाते बहोत करते पर कर दिखाते तो कुछ
लोग ही असली इनसानियत भी तो
उन्ही मे है।

64th Kerala School Kalolsavam, January 14 to 18, 2026, Thrissur

Item Code: 641 Participant Code: 041

दुनिया में अनगिनत लोग है
कुछ अपने कुछ ~~पर~~ पराए कभी-कभी तो अपने ही धोखा देके कहते है इसमें मैं क्या करूँ
और पराए क्या मैं मदद करूँ

"अपने तो अपने होते हैं
बाकी सब पराए होते है"
क्या यह सच है या झूठ

दुनिया में इनसानियत तो कम है पर
~~ब~~ बुराई बहोत है

क्या एक दिन पुरी दुनिया ही बुरी बन जाएगी। या अच्छाई की जीत होगी..

सब मतलबी है कौन बताए उन्हें की उनके अलावा भी दुनिया है।

अपनी बात हो तो अरे क्या करूँ
वरना जा रे मैं क्या करूँ

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

धरती माँ को नुकसान पोहचाकर
अगर कोई अवाज उठाए तो बस यही है आना
तो मैं क्या करूँ

मुंगे जीवो को चोट पोहचाकर
तो मैं क्या करूँ ......

अपने मतलब को आगे ~~रख~~ रखकर
दूसरो का बुरा चाहना कहा की है ~~अच्छाई~~
अच्छाई

अपना दर्द दर्द है दूसरो का नाटक
क्या आपको यही आता है । तो मैं
क्या करूँ ....

बच्चो की गलतियों पर माँ-बाप पर
सवाल उठता है तो क्या वो नही कह
सकते ~~तो~~ मैं क्या करूँ ......

Item Code: 641 Participant Code: 041.

मन की सुनकर भी दिल की टाल नहीं पाई
क्या शायद इस लिए मैं कभी मैं क्या करूँ
यह कहे ना पाई ।

अपने भी कहते है कि मैं क्या करूँ
पराए भी कहते है कि मैं क्या करूँ
अब कैसे पता करूँ की कौन अच्छा
और कौन बुरा

दुनिया की बातें मीठी भी है कड़वी भी
अब मैं क्या करूँ मीठी बातों से खुश हूँ
या कड़वी बातों से कुछ सीखु

क्या भगवान भी कहते होंगे अपने भक्तो से
तो मैं क्या करूँ ....

बहोत बाते सुनी और बहोत सुनाई पर...
हमेशा "तो मैं क्या करूँ" ही सुनना पड़ा ।

कुछ लोगो के लिए परिवार जन्नत है कुछ लोगो का बोझ

माँ-बाप कुछ कहे तो बच्चो का जवाब सिर्फ एक ही है "तो मैं क्या करूँ"

इसको अब बच्चो का मतलब समझे था नादानीयाँ माँ-बाप अपना बच्चा बोल के माफ कर देते

यही माँफी एक दिन बड़ी सजा बन जाती की उन्हे पता ही नही चलता

चीनी की मीठास बना देती है अच्छी चाय पर इनसान की कड़वाहट बना देती है उसे भी कड़वा काड़ा.

पर फिर भी वो कहना कि मैं क्या करूँ चाय कड़वी मैं नही.

"तो मैं क्या करूँ"

किसान अपनी फसल उगाकर
अगर अच्छी फसल हुई तो मेरी ~~मेहेन~~ महनत है
वरना जमीन का कसूर है निकालकर
"तो मैं क्या करूँ.... कह देता.........

परिक्षा ~~मैं~~ में फैल हो जाऊँ तो
टीचर अच्छे से नही पढाती है
"तो मैं क्या करूँ."........

बस हर बार "तो मैं क्या करूँ" ही
सबका समाधान नही है
कभी कुछ कर के भी देखना
चाहिए पूरे दिल पूरे मन से तो होगा जीवन
सफल.

हमेशा कुछ करने का हौसला होना
~~ना की ब रट लगाना "तो मैं क्या करूँ"~~
चाहिए ना की रट लगाना "तो मैं क्या करूँ"
बोल के चुप हो जाना.